गणगौर तीज महोत्सव समिति द्वारा आयोजित गणगौर तीज महोत्सव में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 11 अप्रैल 2024, गुरुवार	समय : 01.30 PM	स्थान : लाचित घाट, फैंसी बाजार

गणगौर तीज महोत्सव समिति के

- अध्यक्ष **श्री विशाल भातरा शर्मा जी,**
- सलाहकार **श्री जय प्रकाश गोयनका जी,**
- निवर्तमान अध्यक्ष **श्री निर्मल शर्मा जी,**
- सचिव **श्री मनमोहन सीकरिया जी**,
- कार्यक्रम संयोजक **श्री विवेक सांगानेरिया जी,**
- कोषाध्यक्ष **श्री संजय मोर जी,**
- कार्यकारी सदस्य **श्री आदर्श शर्मा जी**,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- समिति के सम्मानित अधिकारी एवं सदस्यगण
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियो और सज्जनो,

आप सभी को मेरा नमस्कार।

सर्वप्रथम आप सभी को गणगौर तीज महोत्सव की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

इस शुभ अवसर पर आप सभी के बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह मेरे लिए खुशी की बात है कि अपनी लोक संस्कृति और परम्परा के प्रतीक इस महोत्सव का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं आयोजन समिति को हार्दिक धन्यवाद देता हूं और उपस्थित आप सभी लोगों का अभिनन्दन करता हूं।

अपने गृह प्रदेश राजस्थान से दूर असम में अपनी संस्कृति की झलक देख पाना एक सुखद अनुभव प्रदान करता है। मुझे यह देखकर बहुत खुशी होती है कि राजस्थानी समाज के लोग यहां भी अपनी संस्कृति, रीति-रिवाज को जीवंत रखे हुए हैं। अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़े हुए हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

मैं देख पा रहा हूं कि भारी संख्या में महिलाएं यहां गणगौर तीज महोत्सव मनाने के लिए उपस्थित हैं। यह हमारे समाज की एकता और सौहार्द को दर्शाता है। यह हमारी विशेषता है कि राजस्थान की महिलाएं चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हों, गणगौर और अन्य पर्व को पूरी उत्साह के साथ मनाती हैं।

मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि यहां का मारवाड़ी समाज न केवल अपना उत्सव, बल्कि असम के पर्व उत्सव भी उत्साह के साथ मनाता है। अपनी संस्कृति के साथ-साथ असम की संस्कृति का भी आदर और सम्मान करता है। यह हमारे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक है।

देवियो और सज्जनो,

गणगौर तीज मारवाड़ी समाज का एक महत्वपूर्ण और विशेष पर्व है। इस पर्व को मारवाड़ी समाज धूमधाम से मनाता है।

गणगौर महोत्सव महिलाओं के लिए सौभाग्य और पति की लंबी आयु की प्राप्ति की कामना करने का अवसर है। यह प्यार की मजबूत डोर से बंधे वैवाहिक बंधन और समृद्ध जीवन का उत्सव है।

राजस्थान की समृद्ध संस्कृति में जीवन के रंग, कला, शौर्य, पराक्रम एवं बलिदान की भावना देखने को मिलती है। गणगौर पर्व में भी राजस्थान की बहुरंगी संस्कृति, शौर्य और भावों का एक साथ मिलन देखने को मिलता है। पर्व से अद्भुत और अनोखी संस्कृति के रंग जुड़े हुए हैं, जो कला और संस्कृति की समृद्धि को सुशोभित करते हैं।

गणगौर का त्यौहार सदियों पुराना हैं। हर युग में कुंआरी कन्याओं एवं नवविवाहिताओं का संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं का इस पर्व से गहरा संबंध रहा है। यह सांस्कृतिक उत्सव जीवन मूल्यों की सुरक्षा एवं वैवाहिक जीवन की सुदृढ़ता में एक सार्थक प्रेरणा है।

गणगौर का गौरव अंतहीन पवित्र दाम्पत्य जीवन की खुशहाली से जुड़ा है। यह पर्व आदर्शों की ऊंची मीनार है, सांस्कृतिक परम्पराओं की अद्‌वितीय कड़ी है एवं रीति-रिवाजों का मान है।

गणगौर का पर्व दायित्वबोध की चेतना का संदेश है। इसमें नारी की अनगिनत जिम्मेदारियों के सूत्र पिरोये होते हैं। यह पर्व नारी को शक्तिशाली और संस्कारी बनाने का अनूठा माध्यम है। यह निजी स्वार्थों को एक ओर रखकर दूसरों को सुख बांटने और दुःख बटोरने की मनोवृत्ति का संदेश है। गणगौर संपूर्ण मानवीय संवेदनाओं को प्रेम और एकता में बांधने का निष्ठासूत्र है। इसलिए गणगौर का मूल्य केवल नारी तक सीमित न होकर मानव मानव के मनों तक पहुंचे।

राजस्थान के पर्व त्योहार भी अपने आप में अलग ही महत्व रखते हैं। राजस्थानी परम्परा के लोकोत्सव अपने आप में एक पुरानी विरासत को संजोए हुए हैं।

गणगौर का उत्सव भी ऐसा ही लोकोत्सव है, जिसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है। काल प्रभाव से उनमें लोकाचार हावी हो गया है, परन्तु भावनाओं में कोई कमी नहीं आई है।

हमें आज आवश्यकता है कि हम इस लोकोत्सव को अच्छे वातावरण में मनाएं। हमारी प्राचीन परम्परा को अक्षुण बनाए रखें। इसका दायित्व है उन सभी सांस्कृतिक परम्परा के प्रेमियों पर है, जिनका इससे लगाव है। जो ऐसे पर्वों को सिर्फ पर्यटक व्यवसाय की दृष्टि से न देखकर भारत के सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से देखने के हिमायती हैं।

भारत सामाजिक, सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। इसी विविधता के दर्शन भारतीय त्योहार और उत्सवों में दिखाई देता है। विभिन्न धर्म, समाज, समुदाय और संस्कृति में अपने-अपने तरीके से त्योहारों को मनाया जाता है।

पर्व हमारी लोक संस्कृति के विभिन्न हिस्सों को तुष्ट और पुष्ट करते रहते है, वहीं इसकी निरंतरता से सदौव हमें उर्जावान भी बने रहते हैं।

मानव सभ्यता के प्रारंभ काल से ही मनुष्य ऐसे क्षणों और अवसरों का सृजन करता रहा है, जिसमें वह जीवन के दुःख, कष्ट और तनाव को भुला कर सामूहिक रूप से उत्साह और उमंग का अनुभव कर सके, जिसे हम पर्व और उत्सव से जोड़ कर देखते हैं। यही कारण है कि हम आतुर होकर अपने पर्वों की प्रतीक्षा करते हैं और इसे मनाने की तैयारी में हम आत्मीयता से जुड़ जाते हैं।

हमारी संस्कृति में पर्वों और त्यौहारों का विशिष्ट महत्व होता है। यह हमारे देश की वास्तविक संस्कृति के दिग्दर्शन कराते हैं। इन पर्वों का मुख्य उद्देश्य लोगों में प्रेम और परस्पर सहयोग की भावना विकसित करना है। यह हमारी धार्मिक, सामाजिक और अध्यात्मिक चेतना को भी जागृत करता है।

हमारी भारतीय लोक परंपराओं और संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है कि हजारों वर्षों बाद भी यह संस्कृति आज भी जीवित है।

लेकिन आधुनिकीकरण के इस युग में मानव धीरे-धीरे अपनी लोक संस्कृति को भूलता जा रहा है। इसलिए हमारी लोक संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण और संवर्धन करना आवश्यक है। अपनी लोक संस्कृति की विरासत को सहेजने व संरक्षित करने के लिए समाज के बुद्धिजीवी और विशेषज्ञों को आगे आना होगा। इसके साथ युवाओं को भी इससे जोड़ना होगा।

युवाओं को भी अपने बुजुर्गों से और अपने आसपास के वातावरण से लोक कलाओं की जानकारी लेनी चाहिए और उन्हें सीखकर समाज के हर वर्ग तक प्रसारित करना चाहिए।

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि श्री गणगौर तीज महोत्सव समिति पिछले 40 वर्षों से गुवाहाटी में गणगौर विसर्जन के लिए मेले का आयोजन करती आ रही है। इसमें समाज के सभी वर्गों के लोगों की भागीदारी और सहगयोग से इतना बड़ा आयोजन किया जा रहा है।

आशा है कि भविष्य में भी समिति ऐसे कार्यक्रम करती रहेगी, जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत हमेशा लोगों के मानस पटल में बनी रहे तथा भारत को एक सांस्कृतिक महाशक्ति बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी।

अंत में पुनः आप सभी को गणगौर उत्सव की हार्दिक बधाई एवं गणगौर तीज महोत्सव समिति को उसके भविष्य के कार्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।